NALANDA OPEN UNIVERSITY

Course : M.A Psychology, Part-I

Paper : Paper-VIII

Prepared by : Dr. (Prof.) Prabha Shukla
Retd. Professor of Psychology, Patna University and
Chief Co-ordinator, School of Social Sciences,
Nalanda Open University

Topic : रुचि का मापन (Measurement of Interest)

रुचि का मापन

(Measurement of Interest)

10.1 परिचय (Introduction)

रुचि हमारे व्यवहारिक जीवन की एक प्रमुख प्रक्रिया है। इसका सम्बन्ध व्यक्ति की पसन्द एवं वरीयता से होता है। जिन कार्यों को कोई व्यक्ति अधिक पसन्द करता है, स्वाभाविक रूप में उनमें उसे रुचि अधिक हो जाती है, और वे उन कार्यों को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करते हैं। रुचियाँ एक प्रकार की अर्जित अभिप्रेरणाएँ हैं जो व्यक्ति को कार्य विशेष को सम्पन्न करने के लिए अभिप्रेरित करती हैं। व्यक्ति के जीवन में वास्तविक रुचियों का स्थायित्व पाया जाता है जो उसके जीवन में अधिगम के लिए अभिप्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करती है। रुचि कोई स्वतंत्र इकाई न होकर मानव के सम्पूर्ण व्यवहार का एक पहलू है। यह एक प्रकृति है जो मानव के सुखान्त एवं दुखान्त भावनाओं, आकर्षण एवं विकर्षण तथा पसन्द एवं नापसन्द प्रतिबिम्बित करती है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में रुचियों का विशेष महत्त्व होता है क्योंकि एक व्यक्ति क्या करेगा? और कैसे करेगा? यह बहुत कुछ उसकी रुचियों द्वारा निर्धारित होता है। रुचि व्यक्ति की ऐसी प्रवृत्ति है जिसके कारण वह उसके अनुकूल कार्य करने को स्वयं प्रेरित होता है। रुचियों का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्त्व इसलिए है कि यह अधिगम के लिए अभिप्रेरण स्रोत **(Source of strong motivation to learn)** भी है। मनोवैज्ञानिकों ने रुचि को अपने-अपने तरीके से परिभाषित किया है- **गिलफोर्ड (Guilford, 1964) के अनुसार** - "रुचि वह प्रवृत्ति है जिसमें हम किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया की ओर ध्यान देते हैं, उससे आकर्षित होते हैं या सन्तुष्टि प्राप्त करते हैं।" **आइजेंक और उनके साथियों के अनुसार** - "रुचि व्यवहार की वह प्रवृत्ति है जो कुछ वस्तुओं, क्रियाओं या अनुभवों के प्रति कार्य कर सकने में समर्थ होती है। यह प्रवृति तीव्रता (सामान्यीकरण) से व्यक्ति से व्यक्ति में परिवर्तित होती रहती है।" बिंघम के अनुसार, 'रुचि किसी अनुभव में संविलीन होने एवं इसमें संलग्न रहने की प्रवृत्ति है।' **(An interest is a tendency to become absorbed in an experience and to continue it)**. सुपर के शब्दों में, 'रुचि कोई पृथक मनोवैज्ञानिक इकाई नहीं है, बल्कि यह सम्पूर्ण मानव व्यवहार का एक पहलू है।' **(Interest is not a separate psychological unit, but merely one of several aspects of behaviour)**. **गिल्फोर्ड के अनुसार**, 'किसी वस्तु, व्यक्ति या प्रक्रिया से आकर्षित होने, उसे पसन्द करने या उसमें सन्तुष्टि पाने की ओर ध्यान केन्द्रित करने वाली प्रवृत्ति को रुचि कहते हैं।' **(Interest is a tendency to give attention to attract by, to like and to find satisfaction in an activity, object or person).** **स्ट्राँग के शब्दों में** - रुचि में हम किसी वस्तु के प्रति जागरुक होते हैं। जब हम किसी वस्तु को पसन्द करते हैं; उसकी ओर प्रतिक्रिया करने को तैयार होते हैं और जब किसी वस्तु को नापसंद करते हैं, उसे छोड़ देने अथवा उससे दूर भागने की इच्छा करते हैं।' **(Interest is present when we are aware of an object. We like the object, when we are prepared to react toward it. We dislike the object when we wish to let it alone or get away from it).** **रमेल, रेमर्स एवं गेज के अनुसार**, "रुचियाँ वस्तुत: सुखद एवं दुखद भावनाओं, एवं पसन्दों-नापसन्दों के व्यवहार का आकर्षण एवं विकर्षण के रूप

में प्रतिबिम्ब है।' **(Interests are presuambly the reflection of attraction and aversion in behaviour of feeling of pleasantness and unpleasantness, likes and dislikes).**

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि रुचि किसी वस्तु, व्यक्ति, घटना प्रतिक्रिया या तथ्य को पसन्द करने, उसके प्रति ध्यान केन्द्रित करने तथा उससे सन्तुष्टि पाने की प्रवृत्ति है। जब कोई वस्तु अच्छी लगती है तो स्वाभाविक रूप में उसमें हमारी रुचि उत्पन्न होती है और उस ओर ध्यान आकर्षित होने लगता है। यह जन्मजात एवं अर्जित दोनों प्रकार की होती है। इसका स्वरूप आयु के साथ-साथ परिवर्तित, परिवर्धित एवं परिमार्जित होता जाता है तथा इसमें स्थिरता भी आती है।

10.2 रुचियों के घटक या कारक (Components or Factors of Interest)

रुचियों का कारक विश्लेषण सर्वप्रथम **थर्स्टन** ने किया जिसने स्ट्राँग की व्यवसायिक रुचि-परिसूची के 18 व्यवसायिक मापदण्डों का विश्लेषण किया। इसके बाद **स्ट्राँग** ने 33 व्यवसायिक मापदण्डों के तथ्यों का विश्लेषण किया। **कैटेल** (1950) ने अपने लेख **'बहुपक्षीय स्ट्राँग , क्यूडर** तथा **बेल** की परिसूचियों के कारकीय अध्ययन' में रुचि के अनेक कारकों का उल्लेख किया है। **गिलफोर्ड** (1954) ने अपने लेख 'मानव रुचियों का कारकीय विश्लेषणात्मक अध्ययन' में सेना के अफसरों तथा अन्य व्यक्तियों की रुचियों के कारक विश्लेषण का वर्णन किया है। अन्य मनोवैज्ञानिकों ने भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण अध्ययनकर्ताओं के द्वारा प्राप्त रुचि के मुख्य अवयव निम्नांकित हैं -

थर्स्टन — भौतिकी, कानूनी, शैक्षिक, वर्णनात्मक, जीवशास्त्रीय, कला, व्यापारिक, व्यवसायिक ।

आलपोर्ट-वर्नन — सैद्धान्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सौन्दर्यात्मक।

सूरी — सैद्धान्तिक, सामाजिक, भौतिकवादी, धार्मिक।

क्यूडर — अधिशासी, यान्त्रिक, गणनात्मक, वैज्ञानिक, अनुनयात्मक, कलात्मक, साहित्यिक, संगीतात्मक, समाज सेवा, लिपिकीय।

गिलफोर्ड — यान्त्रिक, वैज्ञानिक, साहसिक कार्य, समाज कल्याण, सौन्दर्य बोध, सांस्कृतिक, समानुरूपता, आत्मनिर्भरता, सौन्दर्य अभिव्यक्ति, लिपिकीय, अपसरण की इच्छा, कलात्मक चिन्तन, ध्यान की इच्छा, विरोधी, व्यापारिक रुचि, अधिशासी कार्य, शारीरिक प्रणोदन, आक्रमण।

कैटेल — वस्तुओं बनाम व्यक्तियों में, व्यापार बनाम विज्ञान में, व्यापार बनाम जीवशास्त्र में, शाब्दिक भाषा सम्बन्धी कार्यों में, व्यक्तियों के व्यवहार करने में, सामाजिक कार्यों में।

स्ट्राँग — रचनात्मक वैज्ञानिक, तकनीकी, उत्पादक प्रबन्धक, अर्द्ध-तकनीकी, सामाजिक, संगीत, एकाउन्टेन्ट, व्यापार, शाब्दिक, औद्योगिक संस्थान का अध्यक्ष ।

10.3 रुचियों के प्रकार (Types of Interest)

मनोवैज्ञानिकों ने रुचियों को चार भागों में वर्गीकृत किया है — अभिव्यक्त रुचि, प्रदर्शित रुचि, परीक्षित रुचि तथा प्रपत्र रुचि। रुचियों के इन प्रकारों की विस्तार से चर्चा नीचे दी जा रही है:-

1. **अभिव्यक्त रूचि (Expressive Interest)** — अभिव्यक्त रुचि का अर्थ है किसी वस्तु, क्रिया या व्यवसाय में रुचि का शाब्दिक कथन। इन रुचियों का पता व्यक्ति से पूछकर लगाया जाता है। इसमें व्यक्ति किसी वस्तु, क्रिया, व्यक्ति, व्यवसाय आदि के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करता है। इस प्रकार की रुचियाँ प्राय: वयस्कों में स्थायी होती है। इन रुचियों को बहुत अधिक विश्वसनीय नहीं माना जा सकता क्योंकि प्राय: व्यक्ति अपने वास्तविक अनुभवों और विचारों को छिपा कर गलत उत्तर दे देते हैं।

2. **प्रदर्शित रूचि (Manifested Interest)** — प्रदर्शित रुचि का अर्थ है किसी क्रिया या व्यवसाय में भाग लेकर रुचि का प्रकटीकरण करना। इस रुचि को शाब्दिक कथनों द्वारा नहीं बल्कि वास्तविक व्यवहार के निरीक्षण द्वारा ज्ञात किया जाता है। जब कोई व्यक्ति सिनेमा देखता है, स्पोर्ट्स में भाग लेता है, संगीत के कार्यक्रम सुनता है, ताश खेलता है, उपन्यास पढ़ता है तो ऐसे व्यवहारों और क्रियाओं का निरीक्षण करके उसकी वास्तविक रुचियों के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है।

3. **परीक्षित रूचि (Tested Interest)** — जब कोई व्यक्ति किसी क्षेत्र में उपलब्धि परीक्षणों द्वारा अधिक अंक प्राप्त करता है तो यह माना जाता है कि उस व्यक्ति की उस क्षेत्र में अधिक रुचि है। उदाहरण के लिए गणित उपलब्धि परीक्षण पर कोई बालक 90 या 95 प्रतिशत अंक प्राप्त करता है तो उस बालक की गणित में अधिक रुचि मानी जायेगी। शिक्षा के क्षेत्र में अधिकांश रुचियों को इसी प्रकार ज्ञात किया जाता है।

4. **प्रपत्र रूचि (Inventoried Interest)** — इस प्रकार की रुचि को मानकीकृत रुचि प्रपत्रों एवं रुचि परीक्षणों के द्वारा ज्ञात किया जाता है। इसमें व्यक्ति अनेक क्रियाओं के समूह में से कुछ का चयन वरीयताओं के आधार पर करता है। इसके आधार पर उसकी रुचि के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती है।

10.4 रूचि एवं अन्य प्रत्ययों में अन्तर (Difference between Interest and Other Concepts)

10.4.1 रूचि एवं अभिक्षमता (Interest and Aptitude)

रुचि एवं अभिक्षमता परस्पर घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं तथा एक-दूसरे के विकास में सहायक होते है। जब हमारी जन्मजात अभिक्षमताओं और सामाजिक सुविधाओं में आदान-प्रदान होने लगता है तब रुचि जागृत होती है। अत: रुचि के विकास हेतु अभिक्षमता का होना आवश्यक है। ठीक इसी प्रकार रुचि के अभाव में अभिक्षमता का विकास भी नहीं होता। अभिक्षमता विकसित हो, इसके लिए रुचि की उपस्थिति आवश्यक हैं। **बिंघम** के अनुसार अभिक्षमता को निर्धारित करने में आधुनिक एवं तात्कालिक रुचियों का अध्ययन अतिआवश्यक है। रुचि अभिक्षमता का न केवल लक्षण है बल्कि यह उसकी मौलिक आवश्यकता है। रुचि एवं अभिक्षमता दोनों में ही हम किसी वस्तु, व्यक्ति, प्रक्रिया अथवा व्यवसाय पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, उनके प्रति आकर्षित होते हैं, उन्हें पसन्द करते हैं तथा उनसे सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं। **मन (Munn)** का विचार है कि किसी व्यक्ति में किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा कार्य के प्रति रुचि तो हो सकती है, लेकिन उसकी अभिक्षमता का होना अनिवार्य नहीं है। अभिक्षमता हो भी सकती है और नहीं भी। उदाहरणस्वरूप कोई व्यक्ति सेल्समैंन बनने में रुचि रख सकता है भले ही उसके अन्दर उस कार्य से सम्बन्धित अभिक्षमता हो अथवा न हो।

रुचि और अभिक्षमता एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित होते हैं। रुचियों का अनुमान अभिक्षमता द्वारा और अभिक्षमताओं का अनुमान रुचियों द्वारा लगाया जाता है। रुचि और अभिक्षमता के बीच सम्बन्ध ज्ञात करने के अनेकों अध्ययन हुए हैं। बर्डी **(Berdie)** के अनुसार इन दोनों के बीच सह सम्बन्ध की मात्रा इतनी कम है कि इनमें कारणात्मक सम्बन्ध **(causal relationship)** को प्रमाणित नहीं किया जा सकता। सह सम्बन्ध की यह मात्रा इतनी प्रबल भी नहीं है कि एक के आँकड़ों के आधार पर दूसरे के बारे में कुछ अनुमान किया जा सके।

रुचि एवं अभिक्षमता में से किसी एक को भी दूसरे से अधिक महत्वपूर्ण नहीं कहा जा सकता। दोनों ही अपने आप में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। रुचि से हमें वे दिशाएँ ज्ञात होती हैं जिनमें व्यक्ति प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ सकता है, जबकि अभिक्षमता हमें इस बात का संकेत देती है कि व्यक्ति किसी दिशा में कितना आगे बढ़ सकता है। रुचि एवं अभिक्षमता दोनों में से किसी की भी उपेक्षा समुचित नहीं है।

10.4.2 रूचि एवं अभिवृत्ति (Interest and Attitude)

रुचि एवं अभिवृत्तियों में कुछ सीमा तक साम्य पाया जाता है, किन्तु इनमें परस्पर विरोध भी दिखाई देता है। रुचि जहाँ किसी व्यक्ति, वस्तु, प्रक्रिया अथवा व्यवसाय की ओर ध्यान केन्द्रित करने, आकर्षित करने से सम्बन्धित है वहीं अभिवृत्ति में धनात्मक तथा ऋणात्मक दोनों पक्ष उपस्थित होते हैं। रुचि में सदैव धनात्मक आकर्षण होता है जबकि अभिवृत्ति में आकर्षण तथा विकर्षण दोनों ही होते हैं। रुचियाँ प्राय: शैक्षिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों से सम्बन्धित होती हैं जबकि अभिवृतियाँ जीवन के प्रत्येक पक्ष एवं प्रतिदिन के व्यवहार से सम्बन्धित होती हैं।

10.4.3 रूचि, योग्यता एवं मूल्य में सम्बन्ध (Relation Among Interest, Ability and Value)

रुचियों से व्यक्ति की योग्यताओं के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं प्राप्त होती। यदि किसी व्यक्ति की संगीत में बहुत अधिक रुचि है तो इससे उसकी संगीत की योग्यता के बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। रुचि और सम्बन्धित योग्यता के बीच लगभग शून्य सह सम्बन्ध पाया जाता है। **क्रॉनबैक** के अनुसार किसी व्यवसाय के लिए उपयुक्त योग्यताओं और रुचि के साथ यदि कोई व्यक्ति कार्य करता है तो वह उसे भली प्रकार कर सकता है और करेगा, उपयुक्त योग्यताओं और अनुपयुक्त रुचि के साथवह उस कार्य को बिल्कुल भी ठीक तरह नहीं कर सकेगा। अत: कार्य सीखने अथवा करने के लिए रुचि के साथ-साथ उस कार्य से सम्बन्धित योग्यताएँ भी होनी चाहिए ।

अनेक अध्ययनों में पाया गया कि रुचि एवं बुद्धि के बीच -.40 से +.40 के बीच साधारण सहसम्बन्ध होता है। इसका तात्पर्य है कि जिन चीजों को व्यक्ति समझता नहीं है अथवा जिन्हें समझने योग्य बुद्धि की उसमें कमी है, उनके प्रति रुचियों का विकास करना अत्यन्त कठिन है।

अनेक अध्ययनों में रुचि का सम्बन्ध मूल्यों के साथ प्रदर्शित किया गया है। रुचियाँ सामान्य योग्यता, विशिष्ट अभियोग्यताओं तथा मूल्यों से विविध प्रकार से सम्बन्धित पाई गई है। भाषा सम्बन्धी तथा वैज्ञानिक **(linguistic and scientific)** रुचियाँ बुद्धि से धनात्मक रूप से सम्बन्धित होती हैं, तकनीकी रुचियाँ यान्त्रिक अभियोग्यता **(mechanical aptitude)** से सम्बन्धित होती है, व्यवसायिक रुचियाँ सैद्धान्तिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक आदि मूल्यों के विपरीत सामग्री पर बहुत अधिक बल देने की प्रवृत्ति के साथ सम्बन्धित पाई जाती हैं।

10.5 रुचि परीक्षणों का संक्षिप्त इतिहास (Brief History of Interest Tests)

रुचि मापन का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। जब व्यावसायिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों में योग्य व्यक्तियों के चुनाव हेतु निर्देशन का अनुभव हुआ तब रुचि परीक्षणों की रचना होने लगी। सबसे पहले, 'कार्नीगी **इन्स्टयूट ऑफ टेक्नॉलाजी**' (1914) में मानकीकृत रुचि परीक्षण की रचना की गई। माइनर (1918) ने, 'व्यावसायिक प्रवृत्ति प्रपत्र' का विश्लेषण कर रुचि के क्षेत्र में वैज्ञानिक अध्ययन करने का श्रेय प्राप्त किया। उन्होंने हाई स्कूल के विद्यार्थियों के लिए एक व्यापक रुचि सूची का निर्माण किया। इस सूची का उद्देश्य व्यक्ति की विशिष्ट रुचियों एवं योग्यताओं का पता लगाना तथा यह सुझाव देना था कि एक व्यक्ति किसी अमुक व्यक्ति या वस्तु को पसन्द या नापसन्द करता है। इन्हीं उद्देश्यों के कारण शैक्षिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र में इसका व्यापकता से प्रयोग होने लगा। सन् 1919-20 में योकन के प्रथम सम्मेलन में 30 वर्ष तक की आयु वाले व्यक्तियों की रुचि मापन हेतु 1,000 कथनों वाली रुचि सूची बनाई गई। इंजीनियरों की यांत्रिक एवं सामाजिक रुचि का मापन करने के लिए मूर (1921ई०) ने एक रुचि परीक्षण निर्मित किया। प्रारम्भ में इसमें 13 कथन थे। बाद में इसकी संख्या 20 हो गई।

रुचि परीक्षण के क्षेत्र में वर्ष 1924 में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य हुए। **फ्रेड** ने **मूर** के कार्य को आगे बढ़ाया। **रिम** ने सफल एवं असफल जीवन बीमा एजेण्टों की रुचियों को मापने के लिए एक रुचि सूची बनाई। **क्रेग**

(1924-25) ने अलग-अलग व्यावसायिक समूहों की रुचि जानने के लिए विविध रुचि परीक्षणों का निर्माण किया। इसी वर्ष **शटिलवर्थ** ने **असायर (Assayer)** के रुचि प्रपत्र में संशोधन किया। उसने धन के प्रति रुचि का मापन किया। अपने संशोधन में उसने द्रव्य दिमागी एवं अद्रव्य दिमागी दिखाने हेतु 75 पदों को सम्मिलित किया। इसी समय **काउण्ड्री** ने **कार्नागी** की रुचि सूची में संशोधन किया।

कार्नहाफर (1927) ने 'सामान्य रुचि सूची' को बनाया। उनकी सूची में केवल लेख लिखना, पत्रिका पढ़ना, समस्या का अध्ययन करना आदि से सम्बन्धित कथन थे। इसमें 69 कथन थे। इसका प्रयोग 110 कॉलेज छात्रों पर किया गया। इसी समय मिनीसोट विश्वविद्यालय के पैटर्न ने कार्नीगी रुचि सूची में संशोधन किया और उसका प्रकाशन **'मिनीसोटा व्यावसायिक रुचि सूची'** के नाम से किया। यह रुचि सूची सामान्य एवं व्यावसायिक दोनों प्रकार की रुचियों का मापन करती है।

सन् 1928 ई॰ में **हुब्बार्ड** ने मिनीसोटा रुचि प्रपत्र में संशोधन किया और उसका प्रकाशन **'हुब्बार्ड रुचि विश्लेषण प्रपत्र'** के नाम से किया। इसमें 116 व्यावसायिक यथा 73 सामान्य कथन सम्मिलित हैं जो लड़कों की यांत्रिक योग्यताओं एवं यांत्रिक रुचियों में अन्तर ज्ञात करते थे। **वालर** तथा **प्रेसले** (1937) द्वारा **"Occupational Orientation Enquiry"** बनाई गई। 1938 में कूडर ने "प्राथमिकता प्रपत्र" की रचना की। सन् 1951 में इसका संशोधन किया गया। इसका प्रयोग मुख्य रूप से हाई स्कूल के विद्यार्थियों एवं वयस्कों पर होता है। **कूडर** के रुचि प्रपत्र में **कारक विश्लेषण विधि** का प्रयोग किया गया है। ली थौर्प ने 1943 में एक व्यावसायिक रुचि प्रपत्र का निर्माण किया। यह रुचि प्रपत्र छः वरीयता क्षेत्रों में बांटा है — प्राकृतिक यांत्रिक, वैज्ञानिक, कला, व्यापार, व्यक्तिगत एवं सामाजिक। सन् 1948 में गिल्फोर्ड, श्नीडमैन एवं जिमर मैन ने एक **"रुचि सर्वेक्षण"** का निर्माण किया। 1951 में रोबर एवं प्रिडिक्स ने "व्यावसायिक रुचि विश्लेषण" की रचना की। **थर्स्टन (1953)** द्वारा "रुचि अनुसूची" निर्मित की गई। इसके बाद हार्नोल्ड जीस्ट एक "चित्र रुचि अनुसूची" बनाया। अशिक्षित व्यक्तियों की रुचियों के मापन के लिए यह अतिमहत्वपूर्ण तथा प्रचलित रुचि प्रपत्र साबित हुआ।

10.6 भारत में रुचि परीक्षणों का विकास (Development of Interest Tests in India)

भारत में सबसे पहले मनोविज्ञानशाला इलाहाबाद ने सन् 1956 में कूडर के रुचि प्रपत्र के आधार पर **"व्यावसायिक रुचि प्रपत्र"** का निर्माण किया। इसी वर्ष बिहार शैक्षिक एवं निर्देशन ब्यूरो ने **"कूडर प्राथमिकता प्रपत्र"** का भारतीय अनुकूलन किया। **के॰ आर॰ चौधरी** ने **वर्णन** के सहयोग से **"वर्नन, राय चौधरी रुचि सर्वेक्षण"** की रचना की। बाद में भारतीय स्थितियों में इसका संशोधन किया गया। वंशगोपाल झिंगरन (1958) ने स्ट्रांग के **"व्यावसायिक रुचि प्रपत्र"** का भारतीय अनुकूल किया। इसके बाद आर॰के॰ ओझा ने स्ट्रांग के **"व्यावसायिक रुचि प्रपत्र"** को आधार मानकर **"रुचि परीक्षण"** की रचना की। **एस॰ चटर्जी (1960)** ने **"Chatterjee's Non-language preference Record"** का निर्माण किया। यह परीक्षण बहुत प्रचलित रहा। एस.बी. भारद्वाज (1962) ने एक रुचि प्रपत्र को विकसित किया। इस रुचि प्रपत्र का एक भाग व्यावसायिक तथा दूसरा भाग अव्यावसायिक रुचियों का मापन करता है। सन् 1965 में **राम शकल पाण्डेय** ने विभिन्न क्षेत्रों में किशोरों की रुचि जानने के लिए 'रुचि परीक्षण' की रचना की। वर्ष 1967 में रघुराजपाल सिंह ने 'रुचि प्रपत्र' तैयार किया। आर.पी. सिंह (1969), मीरा जोशी तथा जगदीश पाण्डेय (1969), लाभ सिंह (1969) ने भी 'रुचि प्रपत्र' का निर्माण तथा मानकीकरण किया। एस.पी. कुलश्रेष्ठ (1970) ने **'व्यावसायिक रुचि प्रपत्र'** एवं शैक्षिक रुचि प्रपत्र' की रचना की। लाभ सिंह ने 1971 में अपनी **'व्यावसायिक रुचि पत्री'** तथा **'शैक्षिक रुचि पत्री'** को मानकीकरण कर प्रकाशित किया। एस.पी. कुलश्रेष्ठ (1972) ने एक ओर **'रुचि परिसूची'** का निर्माण किया।

डी.एन. श्रीवास्तव तथा **वी.पी. बंसल** (1975) ने **'व्यावसायिक रुचि प्रपत्र'** तथा **'शैक्षिक रुचि प्रपत्र'**

का विकास तथा मानकीकरण किया। इसी साल देहरादून की ऊषा रानी तथा एस.पी. कुलश्रेष्ठ ने आई.एस.पी.टी. अर्द्ध संरचित व्यावसायिक रुचि परीक्षण बनाया जो बालकों को रुचि एवं योग्यता के सम्बन्ध में संकेत देता है। इसी वर्ष में सी.पी. माथुर ने 'मुक्त व्यक्त चित्र परीक्षण' निर्मित किया। वर्ष 1982 में चण्डीगढ़ के एस.एस. चड्ढा, एच. के. निझावन एवं द्वारका प्रसाद ने व्यवसायों के मापन हेतु 'व्यावसायिक प्रदर्शन के लिए भारतीय वर्गीकरण पद्धति प्रपत्र' बनाया। एम. मुखोपाध्याय एवं डी.एन. सन्सनवाला (1983) ने एक अंग्रेजी भाषा में है। सन् 1985 में टी. एस. सोढ़ी एवं एच. भटनागर द्वारा 'सोढ़ी भटनागर रुचि सूची' का निर्माण एवं मानकीकरण किया गया। एल.एन. दूबे एवं अर्चना दूबे (1986) ने 'विज्ञान रुचि परीक्षण' ने **'विज्ञान रुचि परीक्षण'** निर्मित किया। मंजू मेहता (1987) द्वारा 'व्यावसायिक अभिवृत्ति परिपक्वता मापनी' बनाई गई। एस.के. सिंह तथा बी.वी. पाण्डेय (1988) ने 'राजनैतिक रुचि मापनी' तथा दिल्ली की निर्मला गुप्ता (1989) ने 'कैरियर परिपक्वता मापनी' का भारतीय अनुकूलन कर व्यावसायिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त किया।

इन रुचि प्रपत्रों के अतिरिक्त भारत तथा विदेशों में अनेकों रुचि प्रपत्र उपलब्ध है। यहाँ पर केवल प्रचलित रुचि प्रपत्रों का ही उल्लेख किया गया है ।

10.7 रूचि मापन के उद्देश्य (Purposes of Interest Tests)

रुचि का परीक्षण कुछ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है जो निम्नलिखित है-

1. विद्यार्थी की वरीयताओं एवं विरुचियों के बारे में अध्यापकों एवं परामर्शदाताओं को सूचनाएँ प्रदान करने के लिए, जिससे वे छात्रों तथा उनकी समस्याओं के बारे में बेहतर समझ विकसित कर सकें ।
2. विविध पाठयक्रमों की माँग के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थी द्वारा स्वयं की रुचियों को पहचानने के लिए एवं स्पष्ट करने के लिए तथा उसके अनुरुप अपने कार्यों का चुनाव करने के लिए।
3. परीक्षार्थी की रुचियों के प्रकार एवं मात्रा के बारे में माता-पिता, शिक्षकों एवं परामर्शदाताओं को जानकारी प्रदान करने के लिए ताकि वे उनकी रुचियों के अनुरुप शैक्षिक एवं व्यवसायिक योजनाएं बनाने में उनकी सहायता कर सकें।
4. युवा-वर्ग की ऊर्जा को निश्चित दिशाएँ प्रदान करने के लिए।
5. सही कार्य के लिए सही व्यक्ति का चुनाव करने में सहायता प्रदान करने के लिए ताकि जीवन में अप्रसन्नता, कुंठा, निराशा आदि से बचा जा सके तथा व्यक्ति की उत्पादक क्षमता में वृद्धि की जा सके।

मिनीसोटा विश्वविद्यालय के 1500 छात्रों के रुचि, व्यक्तित्व एवं अभिक्षमता की तुलना करके **बर्डी (Berdie)** ने यह पाया कि अध्ययन क्षेत्र के चयन करने तथा अध्ययन पूर्ण करने में रुचि ही सबसे महत्त्वपूर्ण पूर्वाभासी कारक थी।

इस प्रकार के अध्ययन रुचि के महत्त्व को भारित **(Weighted)** करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अन्य सभी कारक भी अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं और रुचियों की भूमिका को परिष्कृत करते हैं। इस प्रकार रुचि का मापन न केवल न्यायसंगत (उचित) एवं वांछनीय है बल्कि यह अत्यन्त आवश्यक है।

10.8 स्ट्रॉग का व्यवसायिक रुचि प्रपत्र (Strong's Vacational Interest Blank SVIP)

स्ट्राँग (1919) ने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में एक व्यवसायिक रुचि प्रपत्र का निर्माण किया जिसका प्रकाशन चार रूपों में हुआ — **(i)** पुरुषों के लिए **(ii)** स्त्रियों के लिए **(iii)** विद्यार्थियों के लिए और **(iv)** विद्यालय न जाने वालों के लिए। इस रुचि प्रपत्र में कुल 420 पद थे, जो विभिन्न व्यवसायों, मनोरंजन क्रियाओं, विद्यालय विषयों, व्यक्तिगत विशेषताओं आदि से सम्बन्धित थे। इस प्रपत्र को उसने विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत व्यक्तियों

पर प्रशासित किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि विभिन्न व्यवसायों में कार्य करने वाले व्यक्तियों की रुचियाँ अन्य व्यक्तियों से भिन्न होती हैं।

बाद में उसने अपने रुचि प्रपत्र के चारों रूपों में से 20 पद घटा कर कुल 400 पद ही सम्मिलित किए। यह संशोधन सन् 1938 में हुआ। इन चारों रूपों में से व्यवसायिक रुचि प्रपत्र (पुरुषों के लिए) का ही सर्वाधिक उपयोग होता है। स्ट्रांग के व्यवसायिक रुचि प्रपत्र के 400 पद विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित हैं। ये पद आठ भागों में बँटे हुए हैं।

उपभाग **(Sub-parts)**	पद क्रमांक	कुल पद संख्या
(i) व्यवसाय **(Occupations)**	**1-100**	**100**
(ii) विद्यालय विषय **(School subjects)**	**101-137**	**37**
(iii) मनोविनोद **(Amusements)**	**138-185**	**48**
(iv) क्रिया-कलाप **(Activities)**	**186-233**	**48**
(v) व्यक्ति की विलक्षणताएँ	**234-280**	**47**
(vi) क्रिया-कलापों की वरीयताओं का क्रम	**281-320**	**40**
(vii) दो कार्यों के मध्य रुचि	**321-360**	**40**
(viii) वर्तमान योग्यताओं एवं विशेषताओं का श्रेणीकरण	**361-400**	**40**

इन आठ भागों में से प्रथम पाँच भागों में व्यक्ति को अपने प्रत्युत्तर तीन विकल्पों में से एक का चयन करके देने होते हैं। ये विकल्प हैं - पसन्द **(Like, L)** उदासीनता **(Indifference, I)** एवं नापसन्द **(Dislike, D)**। छठे भाग में विभिन्न क्रियाओं एवं शक्तियों आदि के प्रति प्राथमिकता का क्रम प्रदान करना होता है। भाग 7 में दो कार्यों के मध्य अपनी पसन्द व्यक्त करनी होती है तथा भाग 8 में व्यक्ति को अपनी वर्तमान योग्यताओं एवं विशेषताओं का अनुमान लगाना पड़ता है।

इस रुचि प्रपत्र का प्रमुख उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि परीक्षार्थी की रुचियाँ किस विशिष्ट व्यवसाय के सफल व्यक्ति के साथ मेल खाती है। यह प्रपत्र विभिन्न व्यवसायों के सफल व्यक्तियों की रुचि का एक ढांचा प्रस्तुत करता है। इसी कारण भिन्न-भिन्न व्यवसायों के लिए भिन्न-भिन्न ढांचे हैं। इनमें 47 व्यवसाय पुरूषोचित तथा 27 व्यवसाय न्यायोचित है। कोई व्यक्ति किस व्यवसाय में सफलता प्राप्त कर सकता है, इसका पता इसके प्रत्युत्तरों के तुलनात्मक अध्ययन से चल सकता है। उदाहरण के लिए इंजीनियरिंग व्यवसाय में सफल व्यक्तियों द्वारा अधिकतर पसन्द किए गये कार्यों को देखकर तथा परीक्षार्थी के उत्तरों की उनसे तुलना करके हम यह बता सकते हैं कि वह व्यक्ति इंजीनियरिंग में सफलता प्राप्त कर सकता है अथवा नहीं।

प्रशासन **(Administration)** — इस रुचि प्रपत्र का प्रशासन सामूहिक रूप से किया जाता है, परन्तु इसका उपयोग व्यक्तिगत रूप से भी किया जा सकता है। 15-16 वर्ष के किशोरों से लेकर वयस्कों तक पर यह प्रपत्र उपयोग में लाया जा सकता है। यह एक शाब्दिक परीक्षण है। अत: विद्यार्थियों तथा अन्य शिक्षित व्यक्तियों के लिए उपयोगी है। इसके प्रशासन में लगभग 40-50 मिनट का समय लगता है।

फलांकन **(Scoring)** — प्रत्येक व्यवसाय के लिए अलग-अलग फलांकन किया जाता है जो इस व्यवसाय में व्यक्ति की रुचि की ओर इंगित करता है। प्रत्येक व्यवसायिक फलांकन हेतु लगभग 20 मिनट का समय लगता है। **स्ट्रांग** की फलांकन विधि के अन्तर्गत (1) प्रत्येक व्यवसाय में अलग-अलग रुचि प्राप्तांक व्यक्ति

के रुचि निर्धारण की ओर संकेत करते हैं। (2) व्यवसायों की विशेषता की जानकारी भी प्राप्त होती है। अधिकतम अंकों का तात्पर्य है कि व्यक्ति के प्रत्युत्तर एक विशेषज्ञ की भाँति हैं जबकि न्यूनतम अंक इसके विपरीत इंगित करते हैं। (3) अव्यावसायिक रुचियों को ज्ञात किया जाता है।

भार निर्धारण की प्रक्रिया **(Process of weight determination)**

(i) प्रत्येक पद के प्रत्युत्तर को तीन श्रेणियों में अंकित कर लिया जाता है- पसन्द, उदासीन, नापसन्द।

(ii) प्रत्येक पद के प्रत्युत्तरों की आवृत्ति की विभिन्न श्रेणियों में प्रतिशत के रूप में गणना कर ली जाती है।

(iii) प्रत्येक पद की आवृत्ति के आधार पर भार की गणना की जाती है।

विश्वसनीयता एवं वैधता (Reliability and validity)

इस परीक्षण की विश्वसनीयता अर्द्धविच्छेद एवं पुनर्परीक्षण विधि से ज्ञात की गई है, पुनर्परीक्षण विधि से विश्वसनीयता गुणांक .85 प्राप्त हुआ जबकि अर्द्धविच्छेद विधि द्वारा .76 से .94 तक प्राप्त हुआ।

परीक्षण की वैधता ज्ञात करने हेतु विभिन्न कसौटियों का उपयोग किया गया। सामान्य प्रतिचयन के मध्यमान अंकों से तुलना करके, विद्यालय एवं कॉलेज के विभिन्न वर्गों से सहसम्बन्ध ज्ञात करके, व्यवसायिक प्रशिक्षण के बाद कार्य सफलता की मापनी से, व्यवसाय की आय से, संतुष्टि से, दृढ़ता से तथा अन्य मनोवैज्ञानिक रुचि परीक्षणों से सह सम्बन्ध ज्ञात कर इस परीक्षण की उच्च वैधता प्राप्त की गई है।

सीमाएँ (Limitations)

(i) यद्यपि यह प्रपत्र व्यवसायिक रुचियों का समुचित मापन करता है, फिर भी इससे व्यक्ति विशेष की रुचियों का मूल्यांकन नहीं होता। इससे केवल यह ज्ञात होता है कि किसी व्यक्ति की रुचियाँ किसी व्यवसाय विशेष में सफलता प्राप्त व्यक्ति से मिलती हैं या नहीं। वह स्वयं किन कार्यों को पसन्द करता है, इसका ज्ञान हमें नहीं प्राप्त होता है ।

(ii) परीक्षार्थी द्वारा दिए गए प्रत्युत्तरों की शुद्धता की जाँच करना असम्भव है।

(iii) रुचियाँ अपेक्षाकृत परिवर्तनशील होती हैं । अत: वर्तमान रुचि के आधार पर भावी व्यवसायिक सफलता का अनुमान करना कठिन है।

इन कमियों के बावजूद इस प्रपत्र का व्यापक उपयोग किया जा रहा है।

10.9 स्ट्राँग-कैम्पबेल रूचि परिसूची (Strong-Compbell Interest Inventory-SCII)

यह **स्ट्राँग** के व्यवसायिक रुचि प्रपत्र का ही संशोधित एवं परिवर्तित रूप है। इसका निर्माण स्ट्रांग एवं **कैम्पबेल** (1974) ने किया। इस रुचि परिसूची का उपयोग सामान्य रूप से व्यक्ति द्वारा अपनी कार्य रुचियों को समझने के लिए किया जाता है। साथ ही, कुछ कार्यों एवं व्यवसायों को इंगित किया जाता है जिसमें वह सहजतापूर्वक कार्य कर सके। इस परिसूची में विविध प्रकार के व्यवसायों, क्रिया-कलापों, विद्यालय-विषयों आदि की सूचियाँ रहती हैं और व्यक्ति को उनके प्रति पसन्द **(L)**, उदासीनता **(I)** अथवा नापसन्द **(D)** व्यक्त करनी होती है। उसके उत्तरों की तुलना उन व्यक्तियों के उत्तरों से की जाती है जो विविध व्यवसायों में सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। उसके प्राप्तांक यह प्रदर्शित करते हैं कि उसकी रुचियाँ उन व्यवसायों में सफल व्यक्तियों की रुचियों से किस सीमा तक मिलती हैं।

इस परिसूची में कुल 325 पद हैं जो सात भागों में विभक्त हैं। प्रथम पाँच भागों में परीक्षार्थी पसन्द, उदासीन एवं नापसन्द (**L,I** एवं **D**) के रूप में प्रत्युत्तर देता है। छठे भाग में व्यक्ति युग्मित क्रियाओं में से एक के प्रति अपनी

वरीयता व्यक्त करता है और सातवें भाग में आत्म विवरणात्मक कथनों के प्रति हाँ, अनिश्चित, नहीं के रूप में अनुक्रियाएँ व्यक्त करता है।

प्रत्येक पद के समक्ष गहरा काला चिन्ह बना कर परीक्षार्थी को प्रतिक्रिया देनी होती है। फलांकन कम्प्यूटर की सहायता से किया जाता है। परिसूची के सभी भागों के प्राप्तांकों को प्रामाणिक किया जाता है ।

10.10 क्यूडर रूचि परिसूचियाँ (Kuder's Interest Inventories)

क्यूडर की रुचि परिसूचियों के विभिन्न प्रारूप, संस्करण तथा प्रकाशन हैं। वे विभिन्न दृष्टिकोणों एवं विभिन्न उद्देश्यों से रुचि का मापन करने हेतु प्रयुक्त किए जाते हैं। **क्यूडर** की परिसूची में सभी पद **बाधित वरण अनुक्रिया (Forced choiced responses)** वाले हैं। दिए गए तीन क्रियाकलापों में से परीक्षार्थी को यह बताना होता है कि किसे वह सर्वाधिक पसन्द करता है और किसे सबसे कम।

(i) क्यूडर व्यावसायिक प्राथमिक प्रपत्र **(Kuder Vocational Preference Record)** — इस प्रपत्र में 10 रुचि मापनियों के साथ-साथ एक जाँच मापनी है जो परीक्षार्थी की लापरवाही, भ्रमपूर्ण समझ, सामाजिक वांछनीय किन्तु नापसन्द उत्तरों की जाँच करती है। रुचि मापनियों से बाह्य क्रिया-कलाप, यांत्रिक, गणनात्मक, वैज्ञानिक, अनुनयात्मक, कलात्मक, साहित्यिक, संगीत, समाज सेवा तथा लिपिक की रुचियों का मापन होता है। तीन क्रिया-कलापों में से बाधित वरण के आधार पर सर्वाधिक पसन्द और सबसे कम पसन्द को इंगित करना होता है। इसमें किसी विशेष व्यवसाय के लिए नहीं बल्कि 10 विशद् रुचि क्षेत्रों में अंक प्राप्त होते हैं ।

(ii) क्यूडर सामान्य रुचि सर्वेक्षण **(Kuder General Interest Survey)** — यह क्यूडर के व्यवसायिक वरीयता प्रपत्र का सरलीकृत एवं संशोधित रूप है। इसमें सरल भाषा का उपयोग किया गया है। यह कक्षा 6 से 12 तक के छात्रों के लिए विकसित किया गया है।

(iii) क्यूडर व्यावसायिक (औद्योगिक) रुचि परिसूची **(Kuder Occupational Interest Inventory)** — यह रुचि परिसूची अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत है इसमें 38 व्यावसायिक क्षेत्रों को रखा गया है। व्यवसायिक क्षेत्र बेकर एवं ट्रक चालक से लेकर केमिस्ट एवं वकील तक विस्तृत है। इस प्रपत्र में 38 व्यवसायों के अन्तर्गत कृषक, समाचार पत्रों के सम्पादक, भौतिकशास्त्री, मंत्री, यान्त्रिक, इंजीनियर, निदेशक, मनोवैज्ञानिक आदि का उल्लेख किया गया है। इसमें भी तीन क्रिया-कलापों में से सबसे अधिक पसन्द एवं सबसे कम पसन्द का चयन करके बताना होता है।

इन तीनों प्राथमिकता प्रपत्रों में कुल 368 पद हैं। प्रत्येक पद में तीन कथन दिए रहते हैं। परीक्षार्थी को बाधित वरण करते हुए सर्वाधिक पसन्द और सबसे कम पसन्द का निर्धारण करके अनुक्रिया प्रदान करना होता है।

इस प्रपत्र के पद विस्तृत क्रियाओं को सम्मिलित करते हैं। इसमें सर्वप्रथम प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्ति के अंकों को प्राप्त कर लिया जाता है, फिर उन्हें शतांशीय क्रम में परिवर्तित कर लिया जाता है तथा प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्ति की रुचि एवं प्राथमिकता को दृष्टिगत रखते हुए परिणामी पार्श्व चित्र का विश्लेषण किया जाता है। प्रत्येक श्रेणी में उच्च अंक उस क्रिया की प्राथमिकता को इंगित करते हैं।

यह रुचि प्रपत्र स्ट्रांग की रुचि परिसूची की तुलना में व्यक्ति की रुचियों का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता है। परीक्षार्थी अपनी पसन्द-नापसन्द को बताने के लिए सुई से प्रपत्र पर बने गोलों को छेदता है जिसके चिह्न उस प्रपत्र के नीचे लगे कागज पर अंकित हो जाते हैं। इन छेदों का स्वरूप दस रुचि क्षेत्रों के अन्तर्गत होता है। छेदों को गिनकर व्यक्ति की रुचियों का स्वरूप निश्चित किया जाता है। तत्पश्चात प्रत्येक परीक्षार्थी के प्रत्येक क्षेत्र के अंकों को एक चित्र पर अंकित कर लिया जाता है जिसे पार्श्व चित्र कहते हैं। जिन व्यवसायिक क्षेत्रों में व्यक्ति के प्राप्तांक अधिक होते हैं, उसी प्रकार की उसकी व्यावसायिक रुचि समझी जाती है।

विश्वसनीयता एवं वैधता (Reliability and Validity)

क्यूडर व्यावसायिक रुचि प्रपत्र की विश्वसनीयता आंतरिक संगति विधि से .80 से .95 तक प्राप्त की गई है, पुनर्परीक्षण विधि से इसकी विश्वसनीयता पुरुषों के लिए .50 से .80 तक तथा स्त्रियों के लिए .60 से .80 तक प्राप्त हुई है।

क्यूडर औद्योगिक रुचि प्रपत्र की विश्वसनीयता आंतरिक संगति विधि से .48 से .82 तक तथा पुनर्परीक्षण विधि से स्कूल छात्रों के लिए .61 से .85 तक तथा कॉलेज छात्रों के लिए .71 से .85 तक प्राप्त की गई है।

इसकी वैधता को पार्श्व चित्र, उपलब्धि परीक्षण, पद विश्लेषण तथा अन्य मनोवैज्ञानिक परीक्षणों जैसे स्ट्रांग का व्यवसायिक रुचि प्रपत्र से सहसम्बन्ध द्वारा ज्ञात किया गया है और संतोषजनक पाया गया है।

10.11 कुछ अन्य रुचि परीक्षण (Some Other Inerest Tests)

10.11.1 थर्स्टन रुचि अनुसूची (Thurstone Interest Schedule)

इस अनुसूची का निर्माण **थर्स्टन** द्वारा किया गया है। इसमें विभिन्न व्यवसायों के 100 जोड़े हैं जिनके प्रति परीक्षार्थी को अपनी रुचि व्यक्त करनी होती है। वह जोड़े के दोनों व्यवसायों की तुलना करके जिसे पसन्द करता है उसके चारों ओर एक गोला खींच देता है और जिसे नहीं पसन्द करता उसे काट देता है। वह दोनों को भी पसन्द कर सकता है अथवा दोनों को नापसन्द भी कर सकता है। प्रत्येक तुलना में परीक्षार्थी को यह मान्य होता है कि दोनों व्यवसायों की आय और प्रतिष्ठा समान है। यह अनुसूची दस क्षेत्रों में रुचि का मापन करती है - भौतिकी, गणनात्मक, भाषा, विज्ञान, प्रशासन, कला, संगीत, अनुनयात्मक, सामाजिक एवं परोपकार । प्रशासन एवं फलांकन दोनों दृष्टियों से यह सरल है। इसकी अर्द्धविच्छेद विश्वसनीयता लगभग .90 प्राप्त की गई है।

10.11.2 जीस्ट चित्र रूचि सूची (Geast Picture Interest Schedule)

यह सूची ग्यारह सामान्य क्षेत्रों में व्यक्ति की रुचि का मापन करती है ये क्षेत्र हैं- अनुनयात्मक, लिपिक, यांत्रिक, संगीतात्मक, वैज्ञानिक, वाह्य क्रिया-कलाप, साहित्यिक, गणनात्मक, कलात्मक, समाज सेवा तथा नाटकीय। प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित 4-4 पदों से युक्त इस सूची में कुल 44 पद हैं। प्रत्येक पद में तीन-तीन चित्र हैं जिनका चयन व्यवसायिक एवं अव्यवसायिक क्रियाओं से किया गया है। इस सूची के साथ-साथ एक गुणात्मक जाँच सूची भी दी जाती है। इस सूची का प्रमुख उद्देश्य ग्यारह सामान्य क्षेत्रों में रुचियों का मापन करना है, साथ ही बच्चों एवं वयस्कों के प्रति शिक्षकों एवं परामर्शदाताओं की रुचि का गुणात्मक मूल्यांकन भी करना है। इसके साथ-ही-साथ विभिन्न व्यवसायों के प्रति परीक्षार्थी द्वारा किए गए निर्णयों की प्रेरणात्मक पृष्ठभूमि को जानना भी इस सूची का उद्देश्य है।

यह सूची स्वयं प्रशासित है। इसे व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूपों में प्रयुक्त किया जा सकता है। इसके प्रशासन की कोई समय सीमा निर्धारित नहीं है। स्टेन्सिल की सहायता से फलांकन करके विभिन्न रुचि क्षेत्रों के प्राप्तांक ज्ञात किए जाते हैं। मूल प्राप्तांक को टी-प्राप्तांकों में परिवर्तित कर के रुचि पार्श्व चित्र की रचना भी की जाती है।

इसकी विश्वसनीयता पुनर्परीक्षण विधि द्वारा .62 से .84 के मध्य प्राप्त की गई है। पुनर्परीक्षण छः माह के अन्तराल पर किया गया था।

10.11.3 चटर्जी का अभाषित प्राथमिकता प्रपत्र (Chatterjee's Non-Language Preference Record - CNPR)

यह मापनी अवाचिक है और इसका प्रशासन सामूहिक रूप से किया जाता है। यह दस विस्तृत क्षेत्रों में रुचि का मापन करती है - ललित कला, साहित्यिक, तकनीकी, हस्तकला, बाह्य क्रिया-कलाप, खेलकूद, गृह कार्य,

चिकित्सा, कृषि एवं वैज्ञानिक। इस मापनी में कुल 150 चित्रों वाले पद तीन के विकल्प में हैं। इनमें से परीक्षार्थी को अपनी प्राथमिकता के आधार पर एक का चयन करना होता है । यह मापनी हाई स्कूल तथा कॉलेज के छात्रों के लिए निर्मित की गई है। इसके प्रशासन की कोई समय सीमा निर्धारित नहीं है फिर भी इसे पूर्ण करने में लगभग 45 मिनट लग जाते हैं। परीक्षार्थी अपनी प्रतिक्रिया पदों के समक्ष गुणा (X) का चिह्न लगा कर देता है। दस अलग-अलग रुचि क्षेत्रों का फलांकन दस अलग-अलग स्टेन्सिल्स की सहायता से किया जाता है। इन दसों मापनियों की विश्वसनीयता क्यूडर **रिचार्डसन सूत्र-21 (Kuder Rechardson Formula-21)** द्वारा 1300 छात्र छात्राओं का प्रतिदर्श प्रयुक्त करके .69 से .95 तक प्राप्त की गई। विस्तृत विवरण निम्नवत् है - ललितकला .85 साहित्यिक .79, तकनीकी .86, हस्तकला .76, बाह्य क्रिया-कलाप .93, खेलकूद .91, गृहकार्य .81, चिकित्सा . 95, कृषि .69 एवं वैज्ञानिक .93। इस परीक्षण की वैधता क्यूडर प्राथमिकता प्रपत्र के साथ सहसम्बन्ध की गणना करके ज्ञात की गई है। बाह्य क्रिया-कलाप, वैज्ञानिक, साहित्यिक एवं कलात्मक मापनियों के सहसम्बन्ध .22 से .45 के बीच पाए गए। इस परीक्षण की समवर्ती **(concurrent validity)** वैधता अप्रत्यक्ष रूप से निर्धारित की गई क्योंकि यह अलग-अलग विधा के छात्रों को समुचित प्रकार से विभेदित करता है।

इस परीक्षण का उपयोग अत्यन्त व्यापक रूप से किया जा रहा है। इसके स्थानीय मानक भी निर्मित किए गए हैं। इस परीक्षण का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति की उन सभी विशिष्ट क्रियाओं को जानना है जिसे वह पसन्द अथवा नापसन्द करता है। इस पसन्द और नापसन्द की सूची से जो क्षेत्र उसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त होगा, उसे पहचान कर उसके भविष्य की निश्चय किया जाता है।

10.11.4 कुलश्रेष्ठ की रूचि परिसूची (Kulshreshtha's Interest Test)

इस परीक्षण में 350 शैक्षिक एवं व्यवसायिक क्रिया-कलाप सन्निहित हैं जो सात रुचि क्षेत्रों का मापन करते हैं। ये रुचि क्षेत्र हैं- कला एवं मानविकी **(arts and humanities),** विज्ञान, वाणिज्य, कृषि, गृह विज्ञान, ललितकला एवं तकनीकी । यह परिसूची आधी बाधित वरण तथा आधी सरल चयन प्रकार की है। यह विद्यालय तथा कॉलेज के छात्र-छात्राओं की रुचि मापन हेतु निर्मित हैं। इसकी कोई निश्चित समय सीमा नहीं है, लेकिन इसे पूर्ण करने में लगभग 30 से 40 मिनट तक लग जाते हैं। इस परीक्षण का स्थिरता गुणांक **(stability coefficient)** निम्नवत पाया गया - कला एवं मानविकी .78, विज्ञान .88, वाणिज्य .81, .88, .83, .83, .79, .85 एवं .87 प्राप्त हुआ। कक्षा 8 के 900 तथा कक्षा 10 के 600 विद्यार्थियों पर इसे प्रशासित करके, मानक भी निर्मित किए गए है।

10.11.5 कुलश्रेष्ठ का व्यावसायिक रुचि प्रपत्र (Kulshreshtha's Vocational Interest Record)

यह रुचि प्रपत्र दस व्यवसायिक क्षेत्रों में रुचि का मापन करता है। इसमें कुल 200 व्यवसाय सन्निहित हैं जिन्हें 100 युग्मों में दस क्षेत्रों के अन्तर्गत रखा गया है। प्रत्येक क्षेत्र के अन्तर्गत 20 व्यवसाय हैं जिनमें से दस को ऊर्ध्वाधर और दस को क्षैतिज दिशा में प्रपत्र पर रखा गया है। परीक्षार्थी प्रत्येक जोड़े को देखकर उनमें से किसी एक को चुन कर सही का चिन्ह लगा सकता है अथवा दोनों को चुन सकता है अथवा दोनों को नापसन्द करके गुणा का चिन्ह लगा सकते हैं ।

इस रुचि प्रपत्र द्वारा मापे जाने वाले दस क्षेत्र तथा उनके अन्तर्गत सम्मिलित किए गए व्यवसाय निम्नवत् हैं -

(i) साहित्यिक (Literary-L) इस क्षेत्र में आडिटर, अनुवादक, पत्रकार, कवि, आलोचक, भाषा विशेषज्ञ, नाटककार, भाष्यकार, भाषा अध्यापक, उपन्यासकार, कहानी लेखक आते हैं।

(ii) **वैज्ञानिक (Scientific-Sc)** — इसके अन्तर्गत अभियन्ता, रासायनिक अभियन्ता, सिविल अभियन्ता, वैज्ञानिक, स्वास्थ्य अधिकारी, कम्पाउण्डर, मेडिकल प्रतिनिधि, विज्ञान अध्यापक आदि सम्मिलित हैं।

(iii) **प्रशासनिक (Executive-E)** — प्रशासनिक व्यवसायों में निगम-प्रमुख चिकित्सालय अधीक्षक, अध्यक्ष, उपजिलाधीश, मजिस्ट्रेट, सिटी मजिस्ट्रेट, जज, पुलिस अधीक्षक, प्राचार्य, प्रबन्धक आदि आते हैं।

(iv) **वाणिज्यक (Commercial-C)** — इस क्षेत्र में टाइपिस्ट, सेक्रेटरी, दुकानदार, लेखाकार, स्टेनो, टिकट-कलेक्टर, ड्राफ्टमैन, कोषाध्यक्ष, आयकर अधिकारी, वाणिज्य शिक्षक आदि सम्मिलित हैं।

(v) **रचनात्मक (Constructive-Co)** — रचनात्मक क्षेत्र में सुनार, लोहार, धोबी, फोरमैन, रेडियो मैकेनिक, क्राफ्ट अध्यापक, बुक बाइन्डर, वेल्डर, खिलौना बनाने वाला आदि आते हैं।

(vi) **कलात्मक (Artistic-A)** — कलात्मक व्यवसायों में संगीत निदेशक, संगीत उपकरण निर्माता, चित्रकार, सजावटकर्ता, मंच निदेशक, कार्टूनिस्ट, फोटाग्राफर, नृत्यकार आदि आते हैं।

(vii) कृषि **(Agriculture-Ag)** — इस क्षेत्र के अन्तर्गत किसान, माली, कृषि निरीक्षक, बीज संरक्षण अधिकारी, कृषि शोधकर्ता, भूमि विशेषज्ञ, कृषि शिक्षक, डेयरी मैन, पोल्ट्री मैन आदि व्यवसाय आते हैं ।

(viii) **अनुनयात्मक (Persuasive-P)** — इन व्यवसायों में एम.पी., एम.एल.ए., बीमा एजेन्ट, विज्ञापन प्रबन्धक, राजनैतिक प्रवक्ता, धार्मिक प्रचारक, टूरिस्ट गाइड आदि आते हैं।

(ix) **सामाजिक (Social-S)** — इसमें सामाजिक कार्यकर्त्ता, धर्म सुधारक, समाज सुधारक, स्काउट-गाइड, बिना मूल्य के दवा देने वाले आदि सम्मिलित होते हैं।

(x) **गृहकार्य (House hold-H)** — गृह कार्य से सम्बन्धित व्यवसायों में भोजन बनाने वाला, कढ़ाई करने वाला, गृह विज्ञान अध्यापक, गृह विज्ञान शोधकर्ता, नर्स, गृह प्रबन्धक, भोजन विशेषज्ञ, आन्तरिक साज-सज्जा करने वाला आदि सम्मिलित होते हैं।

इस रुचि प्रपत्र का प्रशासन व्यक्तिगत रूप से किया जाना ही वांछनीय होता है, किन्तु सामूहिक रूप से भी इसका उपयोग किया जा सकता है। इसके प्रशासन हेतु कोई समय सीमा निश्चित नहीं है फिर भी इसे पूर्ण करने में लगभग दस मिनट का समय लग जाता है।

फलांकन के लिए प्रत्येक व्यवसाय क्षेत्र में उर्ध्वाधर और क्षैतिज दिशाओं में लगाए गए सही के चिन्हों का योग कर लिया जाता है। प्रत्येक व्यवसायिक रुचि के लिए न्यूनतम शून्य तथा अधिकतम 20 अंक हो सकते हैं।

इस परीक्षण का मानकीकरण इण्टरमीडिएट के 1050 तथा हाईस्कूल के 700 विद्यार्थियों पर किया गया है। प्राप्त अंकों की व्याख्या मात्रात्मक रूप से तथा गुणात्मक रूप से की जाती है। मात्रात्मक व्याख्या में अंकों के आधार पर निम्न औसत से नीचे, औसत, औसत से ऊपर तथा उच्च रुचि के रूप में विभिन्न क्षेत्रों की व्याख्या की जाती है। गुणात्मक व्याख्या में प्राप्तांकों के आधार पर पार्श्व चित्र निर्मित किया जाता है और मुख्य रुचि क्षेत्र, द्वितीय एवं तृतीय रुचि क्षेत्र तथा सबसे कम रुचि क्षेत्र ज्ञात किया जाता है।

इस परीक्षण की विश्वसनीयता पुनर्परीक्षण विधि से पन्द्रह दिनों के अन्तराल पर .69 प्राप्त की गई।

वैधता का निर्धारण पद विश्लेषण द्वारा किया गया ।

10.11.6 कुलश्रेष्ठ का शैक्षिक रूचि प्रपत्र (Kulshreshtha's Education Interest Record)

यह परीक्षण सात शैक्षिक क्षेत्रों में रुचियों का मापन करता है। ये क्षेत्र हैं- कला, कृषि, वाणिज्य, गृह विज्ञान, विज्ञान, मानविकी एवं तकनीकी। इन सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित कुल 98 विषय हैं जिनके अध्ययन से व्यक्ति की विभिन्न क्षेत्रों की रुचियों का पता चलता है।

इस प्रपत्र का प्रशासन व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों रूपों में ही किया जा सकता है। प्रशासन हेतु कोई समय सीमा निर्धारित नहीं है किन्तु 5 से 7 मिनट में इस पूर्ण किया जा सकता है। इसका मानकीकरण कक्षा 7 के 1200 तथा हाई स्कूल के 500 विद्यार्थियों पर किया गया। पुनर्परीक्षण विधि द्वारा इसकी विश्वसनीयता ज्ञात की गई। विश्वसनीयता गुणांक .91 पाया गया। वैधता ज्ञात करने के लिए इस प्रपत्र के प्राप्तांकों का सह सम्बन्ध अन्य रुचि परीक्षणों के साथ ज्ञात किया गया। वैधता गुणांक .70 से .90 के बीच पाया गया है।

10.11.7 सिंह का रुचि प्रपत्र (Singh's Interest Record)

आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित यह रुचि प्रपत्र **गिलफोर्ड** के कारक उपागम पर आधारित है। इससे सात रुचि क्षेत्रों का मापन होता है। ये रुचि क्षेत्र हैं- यान्त्रिक, व्यापार, वैज्ञानिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, लिपिक एवं बाह्य क्रिया-कलाप। इन सात क्षेत्रों के कुल 316 पद हैं जो 158 युग्मों के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं ।

इस प्रपत्र का प्रमुख उद्देश्य विद्यालय में अध्ययन करने वाले छात्रों तथा बाहर के युवाओं को शैक्षिक तथा व्यवसायिक परामर्श प्रदान करना है। यह प्रपत्र स्वयं प्रशासित है। इसका उपयोग व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है। इसके प्रशासन हेतु समय सीमा निर्धारित नहीं है फिर भी इसके प्रत्युत्तरों को देने में लगभग 35-40 मिनट का समय लग जाता है। फलांकन प्रक्रिया भी सरल है। इसमें प्रत्येक पृष्ठ के प्रत्येक कॉलम **A, B, C, D, E, F** और **E** को अंकों से गिना जाता है और इन अंकों को आवरण पृष्ठ पर उपयुक्त खाने में अंकित कर दिया जाता है।

किसी भी रुचि क्षेत्र में न्यूनतम शून्य तथा अधिकतम 48 अंक हो सकते हैं, किन्तु पूरे परीक्षण पर कुल 68 अंक प्राप्त हो सकते हैं। इस परीक्षण में अंकों की प्रवृत्ति इस प्रकार की है कि यदि किसी कारक में उच्च अंक आते हैं तो अन्य कारकों में स्वयं ही निम्न अंक होंगे।

इस परीक्षण का मानकीकरण उत्तर प्रदेश के हाई स्कूल के 1436 विद्यार्थियों पर किया गया। विभिन्न रुचि कारकों की **अर्द्ध-विच्छेद (split-half)** विश्वसनीयता ज्ञात की गई और स्पीयरमैन-ब्राउन सूत्र से शुद्धि करने के उपरान्त विश्वसनीयता गुणांक .70 से .85 के मध्य प्राप्त हुआ। परीक्षण की विषय-वस्तु वैधता (Content validity) को पद विश्लेषण (Item analysis) द्वारा तथा रुचि कारकों के आपसी सहसम्बन्ध (Inter-correlation) द्वारा निर्धारित किया गया। इस परीक्षण हेतु शतांशीय मानक **(percentile norms)** तथा स्टेनाइन ग्रेड (Stenine grade) मानक निर्मित किए गए हैं।

5.12 सारांश (Summing-up)

रुचि व्यवहारिक जीवन की एक प्रमुख प्रक्रिया है जिसका सम्बंध पसन्द एवं वरीयता से है। पसन्द से रुचि में वृद्धि होती है। मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने तरीके से रुचि को परिभाषित किया है। इन परिभाषाओं को ध्यान में रखा जाय तो हम कह सकते हैं कि रुचि वस्तु, व्यक्ति या तथ्य को पसन्द करने, उसके प्रति ध्यान केन्द्रित करने तथा उससे सन्तुष्टि पाने की प्रवृत्ति है। यह जन्मजात एवं अर्जित दोनों प्रकार की होती है। इसका स्वरूप आयु के साथ-साथ परिवर्तित, परिवर्द्धित एवं परिमार्जित होता जाता है तथा इसमें स्थिरता भी आती है।

रुचियों के घटक का विश्लेषण सर्वप्रथम थर्स्टन ने किया जो स्ट्रोंग के 33 व्यवसायिक मापदण्डों का

विश्लेषण किया। इसी प्रकार **कैटल** एवं **गिलफोर्ड** ने भी रुचियों के अवयव की व्याख्या किया है।

जहाँ तक रुचियों के प्रकार का प्रश्न है मनोवैज्ञानिकों ने इसे चार भागों में बाँटा है- अभिव्यक्त (किसी वस्तु, क्रिया या व्यवसाय में रुचि का शाब्दिक कथन), प्रदर्शित रुचि (किसी क्रिया या व्यवसाय में भाग लेकर रुचि का प्रकटीकरण करना); परीक्षित रुचि (परीक्षा के फल के आधार पर रूची का मापन) एवं प्रपत्र रुचि (मानकीय प्रपत्र एवं परीक्षणों के सहारे रुचि का मापन करना) ।

रुचि एवं अभिक्षमता में काफी गहरा सम्बन्ध है। रुचियों का ज्ञान अभिक्षमता से और अभिक्षमता का अनुमान रुचि से लगाया जाता है। इस प्रकार रुचि अभिक्षमता का न केवल लक्षण है बल्कि मौलिक आवश्यकता है। दोनों में वस्तु, व्यक्ति, प्रक्रिया, व्यवसाय इत्यादि के प्रति आकर्षण होता है और तभी पसन्द तथा संतुष्टि की बात होती है। रुचि से वे दिशाएँ मिलती है जिससे व्यक्ति प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ता है जबकि अभिक्षमता इस बात का संकेत देती है कि व्यक्ति उस दिशा में कितना आगे बढ़ सकता है। इसी प्रकार रुचि तथा अभिवृत्ति सम्बन्धित हैं। अन्तर सिर्फ इतना है कि रुचि में सदैव धनात्मक कर्षण होता है जबकि अभिवृति में आकर्षण तथा विकर्षण दोनों होते हैं। रुचियाँ शैक्षिक, व्यवसायिक क्षेत्रों से सम्बन्धित होती है जबकि अभिवृतियाँ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धि त होती हैं। इसी प्रकार रुचि, योग्यता एवं मूल्य से भी सम्बन्धित है। रुचि से योग्यता का पता नहीं चलता है, लेकिन इससे मूल्यों का काफी गहरा सम्बन्ध है। प्राय: व्यवसायिक रुचियों का सम्बन्ध मूल्यों से बहुत है।

रुचि परीक्षण का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। सर्वप्रथम रुचि परीक्षण की रचना 1914 में हुई। इसके बाद इसका विकास धीरे-धीरे होता गया। वर्तमान समय में पर्याप्त मात्रा में रुचि मापने का परीक्षण उपलब्ध हैं। जहाँ तक भारत में रुचि परीक्षण के विकास का प्रश्न है, यहाँ सर्वप्रथम इलाहाबाद में 1956 **कूडर** के रुचि प्रपत्र के आध ार पर व्यवसायिक परीक्षण का निर्माण किया गया। इसके बाद पर्याप्त मात्रा में रुचि परीक्षकों का या तो भारतीय अनुकूलन हुआ या रचना की गई जिसके प्रमुख परीक्षण की व्याख्या इस पाठ में की गई है।

रुचि परीक्षण के कई उद्देश्य हैं जैसे- प्रयोज्यों के रुचि के बारे में सम्बन्धित व्यक्ति के सूचना देना, रुचि के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्माण करना, युवा वर्ग की ऊर्जा को दिशा प्रदान करना एवं सही कार्य के लिए सही व्यक्ति का चुनाव करना। इसलिए कुछ मनोवैज्ञानिकों ने महत्त्वपूर्ण रुचि परीक्षण का निर्माण किया जिसमें **कूडर** एवं **स्ट्रांग** का रुचि परीक्षण महत्त्वपूर्ण है। स्ट्रांग (वर्ष 1919) ने **स्टैण्डफोर्ड** विश्वविद्यालय में एक व्यवसायिक रुचि प्रपत्र का निर्माण किया जिसके चार भाग हैं - पुरुषों के लिए, स्त्रियों के लिए, छात्रों के लिए, विद्यालय न जाने वाले छात्रों के लिए। इसमें कुल 420 पद थे जो विभिन्न व्यवसाय, मनोरंजनक क्रियाएँ, विद्यालय नियमों एवं व्यक्तिगत विशेषताओं से सम्बन्धित थे। बाद में इसे घटाकर 400 पद कर दिया गया। इस प्रपत्र का प्रकाशन व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों रूपों में किया जाता है। इसके प्रकाशन में समय लगभग 40-50 मिनट लगता है। इसका फलांकन भी सरल है। यह एक विश्वसनीय एवं वैध विधि है लेकिन इस विधि में व्यक्तिगत रुचि का मूल्यांकन सही नहीं होता है, परीक्षार्थी द्वारा दिये उत्तर की शुद्धता की जांच नहीं होता है तथा रुचि के परिवर्तनशील होने के कारण इसका मापन व्यवहारिक रूप में सही नहीं होता है।

स्ट्रांग ने **कैम्पवेल** के साथ 1974 में एक रुचि परीक्षण का निर्माण किया है जिसमें 325 पद सात भागों में विभक्त है। इसका प्रशासन एवं फलांकन सरल है जो कम्प्यूटर की सहायता से किया जाता है। परीक्षण के सभी भागों का प्राप्तांक व्यक्ति की रुचि को बताता है।

क्यूडर ने रुचि परीक्षण से सम्बन्धित विभिन्न दृष्टिकोणों एवं विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कई परिसूचियाँ तैयार की। सामान्य रुचि को मापने के लिए एवं व्यवसायिक रुचि को मापने के लिए उन्होंने तीन प्रपत्रों की रचना की। **कूडर** के व्यवसायिक प्रपत्र में 10 रुचियों का मापन होता है जो लापरवाही, भ्रमपूर्ण समझ, सामाजिक, वांछनीय

किन्तु नासमझ रुचि की जाँच करती है। कूडर का सामान्य रुचि सर्वेक्षण व्यवसायिक वरीयता प्रपत्र का सरल एवं संशोधित रूप है। इसी प्रकार कूडर औद्योगिक परिसूचि 38 व्यवसायिक क्षेत्रों में व्यक्ति की रुचियों का मापन करते हैं। इसमें 368 पद हैं जो कृषि, संचार, प्रौद्योगिकी, यांत्रिकी, मनोवैज्ञानिक इत्यादि क्षेत्रों में रुचि का मापन करता है। कूडर का रुचि परीक्षण स्ट्रांग की तुलना में बेहतर है क्योंकि यह व्यक्ति की रुचि का बेहतर माप करता है। इस परीक्षण की विश्वसनीयता एवं वैधता संतोषप्रद है।

इसी प्रकार रुचि मापन के कई अन्य मापनी हैं जैसे- **थर्स्टन रुचि मापनी** जो 10 क्षेत्रों भौतिकी, प्रशासन, कला, संगीत आदि में रुचि मापन करता है। **जीस्ट चित्र रुचि परीक्षण** जिसमें 44 पद हैं और जो व्यक्ति के लिपिक, यांत्रिक, संगीत, वैज्ञानिक, साहित्य आदि क्षेत्रों में रुचि का मापन करता है। चटर्जी रुचि परीक्षण व्यक्ति के 10 क्षेत्रों में रुचि का मापन करता है जैसे साहित्यिक, तकनीकी, हस्तकला, चिकित्सा, खेलकूद इत्यादि। कुलश्रेष्ठ की रुचि मापनी दो प्रकार की है जिससे व्यक्ति की शैक्षिक एवं व्यवसायिक अभिरुचि का मापन होता है । इसकी पहली सूचि में 350 पद हैं जो शैक्षिक एवं व्यवसायिक क्षेत्र से सम्बन्धित हैं और यह व्यक्ति की रुचि का मापन सात क्षेत्रों में करता है। जैसे- कृषि, विज्ञान, ललित कला इत्यादि। इसका व्यवसायिक प्रपत्र में 200 पद हैं जो व्यक्ति की साहित्यिक, वैज्ञानिक, रचनात्मक एवं कलात्मक इत्यादि क्षेत्रों में रुचि मापन करता है। इसी प्रकार कुलश्रेष्ठ का शैक्षिक परीक्षण 7 शैक्षिक क्षेत्रों जैसे - कला, कृषि, वाणिज्य, विज्ञान, मानवीकी इत्यादि क्षेत्रों में व्यक्ति की रुचि का मापन करता है। सिंह रुचि प्रपत्र 7 रुचि क्षेत्रों का मापन करता है। इसमें 316 पद 158 युग्मों के रूप में है। यह शैक्षिक एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में रुचि का मापन करता है। ऊपर वर्णित सभी परीक्षणों की विश्वसनीयता एवं वैधता संतोषजनक है।

10.13 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1. रुचि से आप क्या समझते हैं? यह किस प्रकार अभिक्षमता अभिवृति एवं योग्यता से संबंधित है ? इसकी विशेषताओं, घटकों एवं मुख्य प्रकारों का वर्णन करें।

   What do you understand by interest ? How it is related to apptitude, attitude and ability. Describe its characteristics, components ability. Describe its characteristics, components and main types.

2. भारत के संदर्भ में रुचि परीक्षण का एक संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करें।

   Persent a brief history of interest tst with reference to India.

3. रुचि मापन से आप क्या समझते हैं ? इसके उद्देश्य एवं उपयोगिता का वर्णन करें।

   What do you understand by Measurment of Interest ? Deiscribe its objectives and utility.